ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

miegkfun'kd ¼–f"k ekSle foKku½] Hkkjr ekSle foKku foHkkx] iq.k   fun'kd] ekSle dsUnz] ngjknwu

o"kZ 28	vad 3	cqysfVu vof/k 09&13 tuojh 2019	fnu eaxyokj	fnukad 08 tuojh] 2019

ekSle iwokZuqeku%

भारत सरकार के iFoh foKku ea=ky; द्वारा वित्त पोषित एवं Hkkjr ekSle foKku foHkkx द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत jk"Vªh; ekSle iwokZuqeku dsUnz] Hkkjr ekSle foKku foHkkx] ekSle Hkou] ubZ fnYyh द्वारा पूर्वानुमानित तथा ekSle dsUæ] ngjknwu द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा m/ke flag uxj ,oa uSuhrky ftys dk eSnkuh {ks=ksa esa vxys ikap fnuksa में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

iwokZuqekfur ekSle rRo	ekSle iwokZuqeku & m/ke flag uxj				
	09&01&2019	10&01&2019	11&01&2019	12&01&2019	13&01&2019
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	20	20	19	19	18
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	3	3	4	6	6
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	साफ	साफ	आंशिक बादल	बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	80	85	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	40	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	008	004	006
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पूर्व–उत्तर–पूर्व	पूर्व

xksfoUn cYyHk iUr d`f"k ,oa izkS|ksfxd fo'ofo|ky;] iUruxj fLFkr d`f"k ekSle foKku o/k'kkyk (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (01–07 जनवरी, 2019) में आसमान में आंशिक से मध्यम बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 18.5 से 22.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 2.9 से 10.7 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 77 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 51 से 71 प्रतिशत एवं मुख्यतः पूर्व–दक्षिण–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

Ñf"k ekSle ijke'k

फसल प्रबन्धः

- चना एवं मसूर में बुवाई से 25–30 एववं 45–50 दिन पर खुरपी द्वारा खरपतवारो को निकालें।
- चना एवं मसूर में आवश्यकतानुसार एक हल्की सिंचाई फूल आने से पहले तथा दूसरी सिंचाई फल बनते समय करे।
- अगर केवन चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारो का ही बहुलता हो तो नवम्बर में बोई गई गेंहूँ की फसल में 30–40 दिन बाद तथा दिसम्बर में बोई समय में बुवाई के 40–45 दिन बाद 2,4 डी0 के 500 ग्रा0 सक्रिय अवयव या मैटसल्फूरॉन मिथाइल के 4 ग्रा0 या कारफेप्ट्राजान के 20 ग्रा0 का 500–600 ली0 पानी में घोल कर फलैट – फेन नोजन द्वारा छिड़काव प्रति हेक्टेयर की दर से करे।
- कगर सकरी पत्ती वाले खरपतवारो की बहुलता हो तो गेंहूँ की फसल में बुवाई के 30–35 दिन बाद फिनोक्साडेन 40–45 ग्र0 या सल्फोसल्फूरॉन के 25 ग्रा0 या क्लाडिनाफॉप के 60 ग्र0 या फिनोक्साप्राप इथाइल के 100–120/हैक्टेयर का छिड़काव करें।
- अगर चौड़ी पत्ती वाले एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवारो का मिश्रित प्रकोप हो तो गेंहूँ की फसल में सल्फोसल्फयूरॉन + मेटसल्फयूरॉन के 32 ग्रा0 का छिड़काव 500–600 ली0 पानी में घोलकर बुवाई से 25–30 दिन में करे।
- जनवरी माह में गेहूँ की बुवाई न करें क्योंकि जनवरी माह में गेहूँ की बुवाई करने पर 60–65 कि0ग्रा0/है0/दिन की दर से कमी आती है तथा फसल पकने के समय गर्म हवा चलने से गेहूँ के दाने बहुत ही पतले हो जाते है।
- खेत में खड़े गेहूँ की फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 20–25 दिन बाद ताजा मूल जड़ अवस्था पर तथा दूसरी सिंचाई 40–45 दिन की अवस्था पर कल्ले निकलते समय करें।
- सरसों में तुलासिता रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

m|ku çcU/k%

- फलदार आम तथा लीची के पौधों में सिंचाई न करें। कयोंकि इससे बौर निकलने में बाधा उत्पन्न होती है। परन्तु नये पौधें जो अभी फलत में नहीं आये है उसमें सिंचाई की जा सकती है।
- करी कीट के नियंत्रण हेतु पालीथीन स्ट्रिप का प्रयोग करें ताकि इन कीटों को पौधों के ऊपर चढ़ने से रोका जा सके। इसके लिए 25 से 30 सेमी चौड़ी पालीथीन लेकर पौधों के मुख्य तना पर जमीन की सतह से लगभग 30–40 सेमी ऊपर पौधों के तनों के चारों ओर से लपेट दें। लपेटने के उपरान्त पालीथीन की निचली तथा ऊपरी सतह पर ग्रीस या खराब तेल का प्रयोग करते हुए पालीथीन के दोनों शिरों को रस्सी से बांध दें।
- पातगोभी एवं फूलगोभी में निराई गुड़ाई करे यूरिया की टॉप ड्रेसिंग व खेत में नमी बनाकर रखें।
- 10 जनवरी के आस–पास आलू की फसल की पत्तियो की कटाई करें।
- आलू एवं टमाटर की फसल में पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
- टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैगन के मुर्झाने की अवस्था मे कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें। यदि पूरा पौधा सूख रहा हो तो इसी घोल से जड़ों की सिंचाई करें।
- मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
- गोभी वर्गीय सब्जियो में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

Ik'kqikyu icU/k%

- सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
- पहाड़ी क्षेत्रों में पशुशाला में गर्मी हेतु हीटर का उपयोग करें। तथा अंगेठी का उपयोग धुंआँ निकलने के बाद कर सकते हैं।
- मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें।
- पशुओं को धान की कन्नी आहार के रूप में दें। जिससें उन्हें उर्जा और गर्मी मिलती है।
- इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।

- ❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

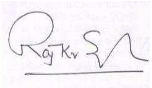

Mk0 vkj0 d0 flg
ik/;kid ,o fIkfIky ukMy vf/kdkjh
xkeh.k df"k ekle lok]
xk-c- iUr df"k ,o ik|k- fo'ofo|ky;] iUruxj